Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, SEPT-OCT, 2018, VOL- 6/47

सिक्ख दर्शन में निहित शिक्षा की आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता

पारूल चौधरी

शोध छात्रा, शिक्षा शास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

सिक्ख दर्शन सभी दर्शनों में सबसे आधुनिक दर्शन है। यद्यपि इसमें प्रत्यक्ष रूप से शिक्षा के बारे में विचार नहीं व्यक्त किया गया है तदापि इस दर्शन के सभी दस गुरूओं की वाणियों में उनके शैक्षिक विचारों को देखा जा सकता है। गुरूओं ने जो शैक्षिक विचार व्यक्त किये है वो तत्कालीन परिस्थितियों में तो उपयुक्त थे ही किन्तु वर्तमान समय में भी उनका अर्थ और प्रासंगिकता उतनी ही हैं। वर्तमान में हम जिस सामाजिक उथल पुथल के दौर से गुजर रहे है वहाँ मूल्यों का संकट छाया हुआ है। धर्म के नाम पर उत्पीड़न, देशप्रेम की भावना का अभाव, जातिवाद, सामाजिक असहिश्णुता, स्वयं की प्रसंशा, आर्थिक असमानता तथा भ्रश्टाचार जैसी चीजे वर्तमान सामाजिक बुराईयों में से ही कुछ है। शैक्षिक संस्थान जो सामाजिक व्यवस्था तथा सामाजिक उन्नति में सहायक होते हैं वह भी अन्याय और घृणा का शिकार हो गये है। ऐसे में गुरूओं के शैक्षिक विचार जीवन देने वाले है। उन्होंने शिक्षा का जो सम्प्रत्यय, कार्यक्रम और विधियाँ प्रस्तुत की, वह आज भी प्रासंगिक है जिसे अपनाकर शिक्षा को नयी दिशा दी जा सकती है। गुरूओं द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता निम्नवत् है–

शिक्षा द्वारा नैतिक मूल्यों का विकासः–वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में मूल्यों का जो संकट छाया हुआ है उसे दूर करने के लिए आव" यक है कि शिक्षा में आध्यात्म को भाामिल किया जाए। गुरू इस बात को जानते थे इसलिए उन्होंने शिक्षा को धर्म से अलग नहीं किया। उनका मानना था कि वास्तविक शिक्षित व्यक्ति वह होता है जो विचारों, कार्यों और भाब्दों में शुद्ध होता है। वर्तमान समय में शिक्षा को धर्म से अलग करने से न केवल शिक्षा के क्षेत्र में बल्कि मानव क्रियाकलापों के सभी क्षेत्रों में मूल्यों का संकट बढ़ गया है। धर्म निरपेक्षता के नाम पर लोग धर्म से अलग होते जा रहे है जिसकी वजह से तनाव और दुःख बढ़ रहा है। यदि शिक्षा को व्यक्ति की जीवन भाक्ति बनानी है तो यह आव" यक है कि उसे नैतिक एवं आध्यात्मिक आधार प्रदान किया जाए। ऐसे में गुरूओं का भौक्षिक दर्शन, जो धर्म पर आधारित है, और उपयोगी हो जाता है। आधुनिक समय में व्यक्ति भौतिकवादी होता जा रहा है और धन कमाने के लिए वह चोरी, धोखा, उत्पीड़न, घूसखोरी करने से बाज नहीं आता है।

गुरूओं के शैक्षिक विचार विद्यार्थियों के चरित्र को निर्मित करने के लिए अति आव" यक है। उनका कहना है कि सच्चा ज्ञान आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त करने में सहायक होता है। सच्चा ज्ञान हमारे नैतिक तन्तुओं को शक्ति प्रदान करता है। स्वार्थी, घमंडी और दुराग्रही विद्वान बनने से बेहतर है कि

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

व्यक्ति अनपढ़ ही बना रहे। यदि शिक्षा व्यक्ति की नैतिक उन्नति करने में सहायक नहीं है तो बेहतर है कि व्यक्ति अज्ञानी किन्तु सद्गुणी बना रहे, जो विद्वान और पापी बनने की अपेक्षा बेहतर है। एक व्यक्ति बहुत सी किताबे पढ़ सकता है, बहुत सी उपाधियाँ प्राप्त कर सकता है लेकिन वह तब तक शिक्षित नहीं कहलायेगा जब तक वह अपने स्वार्थ, लालच और अहम पर नियंत्रण रखने योग्य न हो जाए। इस भौतिकवादी संसार में गुरूओं की यह शिक्षा व्यक्ति में नैतिक मूल्यों का विकास करने के उद्देश्य से पूरी तरह प्रासंगिक है।

मानवीय गुणों का विकासः—मानवता एक ऐसा वाद है जो लोगों के बीच किसी भी तरह के भेदभाव में वि" वास नहीं करता है। वर्तमान मानवतावाद विश्व बंधुत्व की भावना पर आधारित है जिसमें अन्तर्राश्ट्रीय मैत्रीभाव और भ्रातृभाव का तत्व मुख्य है। इस दृश्टि से सभी सिक्ख गुरू मानवतावादी थे जिनका मुख्य कार्य मानव मात्र की सेवा करना था।

गुरू नानक का मानवतावाद विभक्त मानव की कल्पना न करके सर्वांगीण मानव की कल्पना करता है। उनके लिए भारीर भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितनी आत्मा, क्याकि भारीर ही तो वह मन्दिर है जिसके माध्यम से सत्कर्मों द्वारा ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। वह ऐसे मानवतावादी थे जिनके लिये मानव का मूल्य उसकी वाह्य मर्यादा, पद, धनादि में निहित न होकर उसकी आन्तरिक भाुद्धता और उपलब्धिया में निहित है।

आधुनिक संसार संकीर्ण सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद और अंधाधुंध होड़ में लगा है। संकीर्ण निश्ठा लोगों में फूट डाल रही है। झगड़ों और युद्ध में संसार उलझा हुआ है। शक्तिशाली देश कमजोर देश को डरा रहे हैं। मानव ने विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में अति प्रगति की है। वह चाँद पर भी पहुँच गया है लेकिन फिर भी वह धरती पर शांति से रहना नहीं सीख पाया है। भारत में भी अंधविश्वास और संकीर्णतावादी दृश्टिकोण में फँसे हुए है। अलगाववादी तत्व हमारे देश को विभाजित करने में लगे हुए है और हम अब भी गुरूओं के मानव—मानव में भ्रातृ भाव और ईश्वर के प्रति पितृ भाव की भावना के आदशा से कोसो दूर हैं।

शिक्षा में एकीकरण की भाक्ति होती है। मानवीय मूल्यों पर आधारित शिक्षा निश्चित ही चीजों को बदलने में सक्षम है। गुरूओं के शैक्षिक विचार विश्व बंधुत्व और मानव प्रेम की भावना पर आधारित है। उनकी शिक्षा व्यवस्था, जाति, धर्म, लिंग या सम्प्रदायवादी विचारों से मुक्त है। यह प्रेम, सम्मान और आपसी समझ पर आधारित है। उनका मानना है कि मानव ईश्वर की सर्वश्रेश्ठ कृति है इसलिए कोई भी मनुश्य नीच नहीं है। मानव में ई" वर को देखना ही सर्वश्रेश्ठ सद्गुण है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी जीवों का सृजन किया है। ई" वर की कृति होने के कारण मनुश्य में असीम क्षमता होती है। उसका व्यक्तित्व इतना विकसित होना चाहिए कि वह सम्पूर्ण संसार को खुशहाल बना सके।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

''सभु को ऊचा आखीऐ नीचु न दीसै कोई।।
इकनै भाँडे साजिएं, इकु चानणु तिहु लोई''।।[1]

———————————

1. गुरू ग्रंथ साहिब, महला 1, राग सिरि, पृ0–62

क्रियात्मक और उद्देश्यपूर्ण शिक्षाः–सिक्ख गुरूओं का कहना है कि शिक्षा बालक की आध्यात्मिक, बौद्धिक, नैतिक और भौतिक शक्तियों का विकास करने में सहयोग देती है। लेकिन वर्तमान समय में शिक्षा परीक्षा उत्तीर्ण करने और किताबों का अध्ययन करने मात्र का पर्याय बन गयी है। हमारे पाठ्यक्रम बाल केन्द्रित होन की बजाय विशय केन्द्रित हो गये हैं। शैक्षिक संस्थाओं का पूरा ध्यान मात्र विशय के अध्ययन तक सीमित होता है, वह बालक के व्यक्तित्व के विकास पर ध्यान नहीं देते हैं। गुरूओं ने इस तरह के किताबो और सैद्धांतिक ज्ञान की निंदा की है, जो बालक की शक्तियों का विकास करने में सक्षम नहीं है। वह बालक के सोचने, तर्क करने और व्यवहारिक बुद्धि का विकास करना चाहते थे। वह ऐसी शिक्षा चाहते थे जो दैनिक जीवन से सम्बन्ध रखती हो। उनका कहना था कि कोई व्यक्ति कितनी भी किताबे पढ़ ले कितनी भी सूचनाएँ इकट्ठा कर ले लेकिन उसका व्यक्तित्व तब तक पूर्ण नहीं होगा जब तक वह सीखे गये ज्ञान की अनुभूति नहीं करेगा और उसके चिन्तन मनन करने की शक्ति का विकास नहीं होगा।

''बेशक गाड़ियों में लदी हुई सभी पुस्तके पढ़ ली जाए और बेशक इतनी पुस्तक पढ़ ली जाएं कि उनके अच्छे खासे ढर लगाए जा सके, बेशक इतनी पुस्तके पढ़ ली जाए कि बड़ी–बड़ी नावों और खड्डो को उनसे भरा जा सके, पढ़ाई करते हुए ही बेशक सालो साल व्यतीत हो जाए और सालों के सभी महीने ही पढ़ाई की जाए, सारी उम्र भी बेशक पढ़ते हुए गुजार दी जाए और बेशक जीवन के सभी भवास पढ़ाई करते हुए ही व्यतीत किए जाए तो भी प्रभु के समक्ष इनमें से कुछ भी स्वीकृत नहीं होता। हे नानक, प्रभु के दरबार में केवल प्रभु के गुणानुवाद की एक बात ही स्वीकार की जाती है, बाकी सब तो अहंकार बढ़ाने के लिए सिर खपाना ही है।''[2]

———————————

2. गुरू ग्रंथ साहिब, महला 1, आसा–दी–वार पृ0 467

आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों की तरह ही गुरूओ का भी मानना था कि शिक्षा वह है जो बालक में खोज की प्रकृति को जागृत करे, उसकी सोच को उत्तेजित करे, उसकी कल्पना" ीलता का विकास करे और उसे समाज का उपयोगी नागरिक बनाये।

शिक्षक और शिक्षार्थी का विकास–सिक्ख गुरूओं ने शिक्षक की विस्तृत अवधारणा प्रस्तुत की है। उनके अनुसार शिक्षक वह है जो अपने कार्य के प्रति समर्पित होता है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

वर्तमान समय में शिक्षक जिन परिस्थितियों में कार्य करते है वह गुरूओं द्वारा प्रस्तुत की गयी अवधारणा से बहुत अलग है। वह एक बहुत बड़े संगठन का सदस्य होता है जिसके ऊपर बहुत से सामाजिक, आर्थिक दबाव होते है जिसकी वजह से वह जो करना चाहता है वह नहीं कर सकता है। लकिन यह भी सत्य है कि अगर वह अपने कार्य में गहराई से रूचि नहीं लेगा तो वह उसमें आनन्द का अनुभव नहीं करेगा और अगर वह आनन्द का अनुभव नहीं करेगा तो अपने कार्य को ईमानदारीपर्वक नहीं कर पायेगा। गुरूओं ने शिक्षक की जो अवधारणा प्रस्तुत की है वह वर्तमान समय में भी प्रेरणादायक है। आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों की तरह गुरूओं का भी वि" वास था कि बालक के अन्दर अनन्त संभावनाएं होती है जिसका विकास शिक्षक के विशेश देखभाल से ही संभव है।

शिक्षार्थी के सम्बन्ध में भी उनके विचार कम मूल्यवान नहीं है। वर्तमान समय मे शिश्य अधिक स्वतंत्रता चाहते हैं। लेकिन यदि यह स्वतंत्रता गुरू के प्रति समर्पण, अधिगम में उदारता, कठोर–परिश्रम, सादा तथा भाुद्ध जीवन से सम्बद्ध नहीं है तो यह व्यक्ति का भला करने की जगह उसे नुकसान ही पहुंचायेगी। गुरूओं ने शिश्य के जो गुण बताये हैं वो वर्तमान समय को शिक्षा व्यवस्था में आदर्श शिश्य और सत्य के प्रति समर्पित अन्वेशक तैयार करने में सक्षम है। इनका यह सम्प्रत्यय वर्तमान समय के युवाओ को सही मार्ग दिखाने तथा व्यक्तिगत और सामाजिक मुक्ति प्रदान करने में सक्षम है।

गुरूओं ने शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध को बहुत महत्वपर्ण माना है। शिश्य पूरी श्रद्धा, समर्पण और प्रेम के साथ गुरू की सेवा करता है। शिक्षक भी उसे अपने बच्चे की तरह ही प्रेम करता है और एक माँ की तरह उसकी देखभाल करता है।

''जैसे माँ पुत्र को जन्म देकर अपनी नजर के सामने उसका पालन पोशण करती है, उसको अन्दर–बाहर आती जाती पुचकारती भी है और उसके मुख में खाना भी देती रहती है उसी प्रकार सद्गुरू गुरसिख को अपना प्यार देकर उसकी सम्भाल करता है।''[3]

सामाजिक सुधार की शिक्षा–प्राचीन भारत में यह सभी का नैतिक कर्तव्य था कि वह अपनी शिक्षा पूर्ण होने के बाद समाज की सेवा करें ताकि वह अपनी शिक्षा का ऋण चुका सके। गुरूओं का मानना है कि स्कूल समाज की उन्नति के लिए कार्य करते हैं और समाज शिक्षा को बढ़ावा देने के धर्म से बँधा होता है। दुर्भाग्य से अब हमारे देश में पारस्परिकता के इस सम्बन्ध को बढ़ावा नहीं दिया जा रहा है। समाज निर्माण में शिक्षा महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है अगर गुरूओं के इस समझदारीपूर्ण सलाह को स्वीकार कर लिया जाए कि शिक्षा का उद्देश्य केवल तभी पूरा हो सकता है जब व्यक्ति दूसरे की भलाई के लिए कार्य करें। मनुश्य को इमानदार परिश्रम द्वारा अपनी आजीविका कमाना चाहिए और उसका कुछ भाग जरूरतमंद लोगों और समाज सुधार के लिए दान कर देना चाहिए।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

''जो मेहनत करके खाता है और अपनी कमाई में से कुछ दान भी देता है, हे नानक, ऐसे व्यक्ति वास्तव में अपने ठीक रास्ते को पहचानने वाले होते हैं।''[4]

3. गुरू ग्रंथ साहिब, महला 4, गउड़ी बैरागणि, पृ0 168

नारी–जाति के प्रति सम्मान और श्रद्धा का भाव सिक्ख धर्म का भा" वत सन्देश है। नारियों के विकास हेतु गुरू नानक व गुरू गोविन्द सिंह ने सशक्त आवाज उठाई और उन्हें हर क्षेत्र में पूर्ण अधिकार दिलाने के यथोचित प्रयास किये। इतिहास सर्जन करने वाले महान व्यक्तियों को जन्म देने वाली जननी को बुरा कहने के लिए समाज को फटकारा और समझाया कि स्त्री के बिना अनुशासित समाज की परिकल्पना नहीं हो सकती है। सती प्रथा को सिक्ख दर्शन में स्वीकार नहीं किया गया है। गुरूओं ने विवाह को मात्र सामाजिक सुरक्षा का साधन नहीं माना है बल्कि इसे आध्यात्मिक प्रगति में भी सहायक माना है। सिक्ख समाज में सामाजिक कार्य अत्यनत सरल ढंग से सम्पन्न होते है। विवाह, उत्सव, भोज आदि छुट्टी के दिन रविवार को दोनों पक्षों की सहूलियत के अनुसार तय किये जाते है। दहेज माँगना या नकद रूपया माँगना पाप माना गया है। गुरू नानक ने वाह्याडम्बरों जैसे–तिलक, माला, पूजा, तीर्थस्नान आदि का खण्डन किया तथा सत्संग, सद्गुरू मन की पवित्रता को महत्व दिया।

समाज सेवा का यह विचार आधुनिक स्वार्थी, आत्म–केन्द्रित और भौतिकवादी समाज के लिए वरदान साबित हो सकता है। यदि भारत की प्रचलित शिक्षा व्यवस्था की जड़े भारतीय परम्पराओं और उसकी आध्यात्मिक विरासत में हो तो वह समाज के लिए और लाभदायक हो सकती है। गुरूओं ने समाज सुधार के लिए भारतीय धर्म, परम्परा, इतिहास और प्राचीन साहित्य को शिक्षा व्यवस्था का आधार बनाने की वकालत की थी। भारतीय संस्कृति में उन्हें पूरा वि" वास था और वह उसे पुनः जीवित करना चाहते थें।

जीवन को क्रियाशील बनाना–गुरू मात्र अव्यवहारिक दार्शनिक नहीं थे बल्कि उन्होंने स्वयं क्रिया प्रधान जीवन का अनुकरण किया और तब अपने अनुयायियों को भी इसकी शिक्षा दी। वह गीता के कर्मयोग के सिद्धान्त में वि" वास करते थें। यहाँ तक कि मोक्ष की प्राप्ति के लिए भी उन्होंने कर्म को आव" यक माना है।

4. गुरू ग्रंथ साहिब, महला 1, सारंग की वार, पृ0 1245

''हे जीव, तू उद्यम करते हुए कमाई कर और उसके सुख और आनन्द का उपभोग कर। हे नानक उसका सुमिरन करते हुए तू प्रभु से मिलाप कर जिससे तेरी सारी चिन्ताएं दूर हो जाएंगी।''[5]

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक प्रयोजनवादियों की तरह गुरूओं ने भी करके सीखने, स्व–सहयोग और श्रम की गरिमा पर बल दिया है। उनका मानना था कि अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण उचित क्रियाओं द्वारा ही होता है। उचित क्रियाओं से रहित व्यक्ति अज्ञानता और मूर्खता में पड़ कर बर्बाद हो जाता है।

''ज्ञान की प्राप्ति बातों से ही नहीं होती, उसका कथन करना तो लोहे जैसा कठिन कार्य है। यदि प्रभु की कृपा हो जाए तभी उसे पाया जाता है अन्यथा उसको पाने के लिए चालाकी और जोर–जबरदस्ती केवल ख्वार करने वाले ही साबित होते हैं।''[6]

सिक्ख धर्म एक क्रिया प्रधान धर्म है जो सन्यासी जीवन को उचित नहीं मानता है। जीवन में श्रम का सम्मानपूर्ण स्थान होता है। स्वयं हाथों से कार्य करना समाज सेवा का सबसे अच्छा तरीका है। वह व्यक्ति जो कठिन परिश्रम द्वारा जीविकोपार्जन करता है और अपनी आजीविका का दसवाँ भाग जरूरतमंदों में बाँट देता है वही वास्तविक रूप से जीवन जीने के सही तरीके को जानता है। गुरू की यही शिक्षाएँ (सिक्खों) पंजाबियों के जीवन का आधार होती है जो उन्हें व्यवहारिक बनाती है और उन्हें पूरी तत्परता के साथ जीवन ––––––––––––––––

5 गुरू ग्रंथ साहिब, महला 5, राग गौरी, पृ0 522

6. गुरू ग्रंथ साहिब, महला, आसा–दी–वार, पृ0 465

की समस्याओं को हल करने के लिए प्रेरित करती है।

सौंदर्यात्मक विकास–सौंदर्यात्मक कलाएँ जैसे संगीत, नृत्य, चित्रकला, गीत, साहित्य, व्यक्तित्व के संतुलित भावनात्मक विकास के लिए आवश्यक होते हैं। यह व्यक्ति की सृजनात्मक कल्पना शक्ति का विकास करत है। यह शिक्षा व्यक्ति के व्यवहार में सुधार लाती है और व्यवहार का यह परि" ोधन उसे सभ्य बनाता है। अतः शिक्षा का यह उद्देश्य होना चाहिए कि वह विद्यार्थियों में सौंदर्य और कला के प्रति गहन प्रेम उत्पन्न करें। यह अभिरूचि जितनी गहरी और विस्तृत होगी जीवन उतना ही अच्छा और खूबसूरत होगा। ललित कलाओं में उच्च मानवीय भाक्ति होती है जो मानव को उत्कृश्ट आनंद प्रदान करता है और उसे सभ्य, शुद्ध और सुसंस्कत्य बनाता है।

गुरू नानक के काव्य में सौन्दर्यानुभूति चरम पर पहुँच गई है। उनकी सौन्दर्यानुभूति में निजता है, मौलिकता है। उनके अनुसार सौन्दर्य वही है जो सत्य और शुभ में मण्डित हो, उपादेयता उसका लक्ष्य हो। उपयोगिता और नैतिकता से रहित सौन्दर्य अर्थहीन है, अग्राह्य है। इसी वजह से गुरूओं ने अपनी शिक्षा पद्धति में गीत, संगीत और साहित्य को विशेश महत्व दिया है। गुरू ग्रंथ साहिब गीत और संगीत से भरा है। इस प्रकार गुरूओं ने संगीत को लाकिक आनंद, आध्यात्मिक सुख और परम हर्श का साधन माना है। गुरूद्वारे में सुबह और भााम की धार्मिक सभाओं में गाया जाने वाली गुरूबानी, इसे गाने वाले और सुनने वाले दोनों को परम आनन्द और श्रद्धा से भर देता है।

''जो प्रभु की कीर्ति को सुनता और गाता है, दुख उस व्यक्ति के पास नहीं जा पाता।''[7]

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

गुरूबानो खुद में सर्वोच्च पद्य है। इसके गीत शुद्ध और निर्मल है। गुरूओं के ये गीत वर्तमान समय की धरोहर है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ————————————————

7. गुरू ग्रंथ साहिब, महला 5, राग गउड़ी, पृ0 190

व्यक्ति को प्रेरणा और निर्देश देते हैं तथा व्यक्तित्व के सौंदर्यात्मक विकास में सहायक होते हैं।

धर्म निरपेक्षता की शिक्षा–गुरू नानक का धार्मिक विचार एक सुधारक का है। धर्म के प्रति उनका दृश्टिकोण उदार है। वह वि" व धर्म की स्थापना तथा सर्वधर्म समन्वय की कल्पना करते हैं। सिक्ख धर्म सभी प्रकार की धर्मान्धता और अन्धविश्वास के विरूद्ध खड़ा होने वाला धर्म है जो धर्म में व्याप्त ऊँच–नीच को समाप्त करने पर बल देता है और सभी धर्मों के साथ समभाव की प्रेरणा देता है।

गुरू किसी भी धर्म के खिलाफ नहीं थे। गुरू नानक ने हिन्दुओं को अच्छा हिन्दू और मुस्लिमों को अच्छा मुस्लिम बनने की सलाह दी थी। वह शांतिपूर्ण सह अस्तित्व पर आधारित धर्म निरपेक्षता के समर्थक थे। गुरू गोविंद सिंह ने मुस्लिम शासकों के खिलाफ बहुत से युद्ध किये। लेकिन वह किसी धर्म या समुदाय विशेश के खिलाफ नहीं थे। उनका यह युद्ध निर्दोश लोगों, बच्चों तथा महिलाओं पर अत्याचार करने वाले उत्पीड़नकारियों के खिलाफ था। गुरू नानक के अनुयायी हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही थें। मर्दाना नामक मुस्लिम जीवन पर्यन्त उनका अनुयायी रहा। अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर की संस्थापना के समय उसकी नींव एक मुस्लिम भक्त ने ही रखी थी।

गुरूओं ने जाति और धर्म के बीच की खाई को पाटने का प्रयास किया। उनका कहना था कि सच्चा धर्म वाह्य व्यवहार में नहीं होता है बल्कि प्रेम, वि" वास, दया और मानवता जैसे आन्तरिक अनुशासन में झलकता है। जाति–धर्म, ऊँच–नीच, अमीर–गरीब के बीच के भेदभाव को खत्म करने के लिए ही गुरूओं ने संगत और पंगत की परम्परा को भ्रारू किया। दीक्षा संस्कार में गुरू गोविन्द सिंह ने पाँचों सिक्खों को जो अलग–अलग जाति के थे, एक ही पात्र से अमृत पिलाया। उन्होंने दलितों और निम्न जाति के लोगों के कल्याण के लिए कार्य किया।

पाँचवें गुरू, गुरू अर्जुन देव धर्म निरपेक्षता के महान पैगम्बर थे। इस दिशा में उनका सबसे उल्लेखनीय कदम था आदि ग्रंथ का संग्रह। आदि ग्रंथ में उन्होंने न केवल अपने पूर्ववर्ती गुरूओं के भजनों को डाला बल्कि अन्य भारतीय संतों और भक्तों के पवित्र कार्यों को भी संग्रहित किया। ये संत और भक्त विभिन्न धर्म और जाति के थे। जयदेव ब्राह्मण थे, नामदेव छत्रिय, त्रिलोचन वै" य, सदना कसाई, धन्ना किसान, सेन नाईं, कबीर जोलाहा और रामदान मोची थे। वे देश के अलग–अलग भागों से सम्बन्ध रखते थे। जयदेव बंगाल से थे, नामदेव मराठी थे, कबीर बनारस से थे, त्रिलोचन बाम्बे से और धन्ना राजपूताना थे। लोगों तक प्रेम, सद्भाव और सामंजस्य का संदेश पहुँचाने के लिए इन्होंने आम जन की भाशा में अपनी रचनायें लिखो है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

राश्ट्रीय एकता–हिन्दुओं को धर्म परिवर्तन से रोकने, उन्हें धर्म में वापस लाने तथा राश्ट्रीय एकीकरण के लिए गुरूओं ने हिन्दू धर्म के सौंदर्य की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की है। गुरू गोविंद सिंह ने लोगों को अपनी परम्परागत विरासत के प्रति जागृत किया। वह हिन्दी साहित्य के महान कवि थे और उनका मानना था कि लोगों को उनकी प्राचीन परम्पराओं का ज्ञान कराकर उन्हें राश्ट्रीय एकता के सूत्र में बाँधा जा सकता है।

गुरूओं ने पूरे भारत का तथा पड़ोसी दे" ाों का भ्रमण किया ताकि विभिन्न धर्म के लोगों के बीच समझ, साहार्द तथा दोस्ती को मजबूत किया जा सके। ''विशेश पोशाक धारण कर, जो हिन्दू साधुओं और मुस्लिम फकीरों के वस्त्रों का मिश्रण था, गुरू नानक ने हिन्दू और मुस्लिम तीर्थस्थलों की विस्तृत यात्रा की, पूर्व में असम से बंगाल तक, दक्षिण में कोंकण से मालाबार तक और पश्चिम में बगदाद से मक्का तक। सभी जगहों पर उन्होंने एक ही संदे" ा दिया,
सभी धर्मों के एकीकरण का और औपचारिक पूजा की निरर्थकता का।''[8] यह ––––––––––––––––

8. सिंह, हरबंस, (एडिटेड). (1975). पर्सपेक्टिव ऑन गुरू नानक, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, पृ0–332

वह प्रयास थे जो गुरूओं द्वारा सामाजिक, भावनात्मक, परम्परगत और राश्ट्रीय एकीकरण के लिए किये गये।

अतः कहा जा सकता है कि गुरूओं की शिक्षाएं धर्म या समुदाय आधारित नहीं थी। उनक द्वारा प्रस्तुत शक्षिक विचार की वास्तविक समझ उत्पन्न करके विभिन्न समुदायों और धर्मों के बीच की खाई को भरा जा सकता है और स्नेहपूर्ण वातावरण का निर्माण किया जा सकता है। हिन्दू और सिक्ख एक है। वह एक सिक्के के दो पहलू है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

हिन्दी–

– *गुरू ग्रंथ साहिब. (पंजाबी). शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबन्ध कमेटी, अमृतसर।*

– *जग्गी, रतन सिंह. (1975). गुरू नानक–व्यक्तित्व, कृतित्व और चिन्तन. भाशा विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला।*

– *मिश्र, व्यास. (1996). सिक्ख धर्म का दार्शनिक विवेचना. आराधना प्रकाशन, वाराणसी।*

– *सिंह, क्रिपाल. (2011). सुखमानी साहिब टीका–गुरू अर्जुन देव साहिब जी. प्रकाशक–संत मक्ख सिंह जी, अमृतसर।*

– *सिंह, गुरमुख. निहाल. (1970). गुरू नानक–जीवनी, युग एवं शिक्षाएँ. नानक फाउण्डेशन, नई दिल्ली।*

– *सिंह, जगजीत. (2011). सरल गुरू ग्रंथ साहिब एवं सिक्ख धर्म. विद्या विहार, नई दिल्ली।*

– *सिंह, जोध. (2003). श्री गुरू ग्रंथ साहिब (मूल पाठ एवं हिन्दी अनुवाद). द सिक्ख हैरीटेज पब्लिकेशन्स, पटियाला।*

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

English-

Bahra, Lakhbir Kaur. (2008). *Philosophy of Guru Granth Sahib and its Educational Implications. Unpublished Ph.D Thesis, Luknow University, Lucknow.*

Karu, Guninder. (1981). *The guru granth sahib its physics and metaphysics. Manohar publishers & Distributors, New Delhi.*

Kohli, Surinder Singh. (1976). *A critical study of Adi granth. Moti Lal Banarsi Dass, Patna.*

Kohli, Surinder Singh. (1973). *Sikh Ethics. Munshiram Manoharlal Publishers, New Delhi.*

Raina, Amrit kaur. (1987). *The Educational philosophy of the Sikh Guru. Published by language department, Punjab.*

Singh, Balbir. (1970-71). *Guru Nanak Lectures. University of Madras, Madras.*

Singh, Daljit. (1979). *Sikhism- A comparative study of its theology and Mysticism. Sterling Publishers. New Delhi.*

Singh, Jasbinder. (2014). *The Sikh Gurus Lives and Teachings. Jawahar Publishers, New Delhi.*

Singh, Nirbhai. (1990). *Philosophy of Sikhism (Reality and its Manifestation). Atlantic Publishers & Distributors, New Delhi.*

Singh, Nirbhai. (2003). *Sikh Dynamic Vision. Harnam Publications, New Delhi.*

Singh, Sher. (1966). *Philosophy of Sikhism. Sterling Publishers, New Delhi.*

Vark, Hardev singh. (2005). *Sabd Guru to Granth Guru- An Indepth Study- By Devinder Singh Chahal. Understanding Sikhism- The Research Journal, Jan- June (2005), Vol – 7, No. 1.*

Website Source-

https://www.sikhiwiki.org/index.php/sikhism

https://www.shodhganga.inflibnet.ac.in

https://www.sikhiwiki.org/images/c/c6/THE-CONCEPT-OF-EDUCATION-IN-SRI-GURU-GRANTH-SAHIB

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies